Mind very well...

03-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

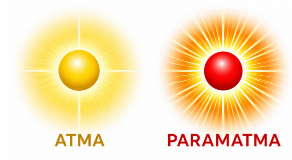

"मीठे बच्चे - नाम-रूप से न्यारी कोई भी चीज़ नहीं होती, आत्मा वा परमात्मा को भी नाम-रूप से न्यारा नहीं कहेंगे, उसमें भी अविनाशी पार्ट नूँधा हुआ है"

प्रश्नः-शिवबाबा को भोलानाथ कहकर याद करते हैं, उसे भोला क्यों कहा है?

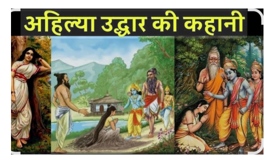

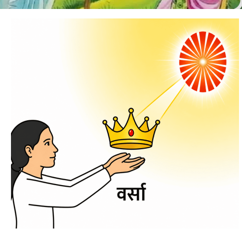

उत्तर:-क्योंकि बाप ही अहिल्याओं, गणिकाओं, कुब्जाओं का उद्धार करते हैं। उन्हें विश्व की राजाई का वर्सा दे देते हैं। मनुष्य तो बाप के लिए कह देते - दु:ख भी वह देता, सुख भी वह देता, परन्तु बाबा कहते हैं मैं तो तुम बच्चों के लिए सुख का राज्य स्थापन करता हूँ। मुझे दु:ख हर्ता सुख कर्ता कहा गया है। विचार करो कि मैं बाप अपने बच्चों को दु:ख कैसे दे सकता हूँ।

गीत:-दूर देश का रहने वाला... Click

दूर देश का रहने वाला आया
आया देश पराये
मन से मन की पूछ रहा है
मन से मन की पूछ रहा है
अपना भेद छुपाये
दूर देश का रहने वाला आया
आया देश पराये
दूर देश का रहने वाला आया

देख उसे इक पेड़ पे मैना बोली
देख उसे इक पेड़ पे मैना बोली
क्या
आओ, आओ मुसाफ़िर बोलो अपनी बोली
मुसाफ़िर बोलो अपनी बोली
क्यों इतने घबराये, क्यों इतने घबराये
टूटा घोसला बना रही हूँ
बना सको तो बुला रही हूँ
क्यों ना हाथ बटाये
क्यों ना हाथ बटाये
दूर देश का रहने वाला आया
आया देश पराये
दूर देश का रहने वाला आया

क्यों मुसाफ़िर रूठ गया
हाँ रूठ गया, दिल तोड़ दिया
क्यों मुसाफ़िर रूठ गया
हाँ रूठ गया, दिल तोड़ दिया
पाया था, इक राज़ भूल के छोड़ दिया
फिर लेने को हम आयें
दूर देश का रहने वाला आया
आया देश पराये
दूर देश का रहने वाला आया

देख अँधेरा हार ना जावे ना बेहोश हुआ
बोली मैना कहो मेरा क्या दोष हुआ
तुम आये हम आये
हम आये तुम आये
आया आया देश पराया
दूर देश का रहने वाला आया
आया आया देश पराया
दूर देश का रहने वाला आया

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

03-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

Refer last pages

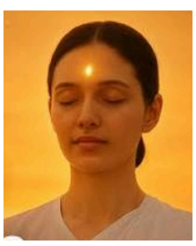

ओम् शान्ति। रूहानी बच्चों ने गीत सुना अर्थात् रूहों ने इस शरीर की कान रूपी कर्मेन्द्रिय द्वारा गीत सुना - दूरदेश से मुसाफिर आया है। तुम सब मुसाफिर हो ना। जो सब मनुष्य मात्र आत्मायें हैं वह सभी मुसाफिर हैं। आत्माओं का कोई भी घर नहीं है। आत्मा है निराकार। निराकारी दुनिया में रहने वाली निराकारी आत्मायें हैं। उसको कहा जाता है निराकारी आत्माओं का घर, देश वा लोक। इसको जीव आत्माओं का देश कहा जाता है। वह है आत्माओं का देश फिर जब आत्मायें यहाँ आकर शरीर में प्रवेश करती हैं तो निराकार से साकार बन जाती हैं। ऐसे नहीं कि आत्मा का कोई रूप नहीं है। रूप भी जरूर है, नाम भी है। इतनी छोटी आत्मा कितना पार्ट बजाती है - इस शरीर द्वारा। हर एक आत्मा में पार्ट बजाने का कितना रिकार्ड भरा हुआ है। रिकार्ड एक बार भर जाता है फिर कितना भी रिपीट करो, वही चलेगा। वैसे आत्मा इस शरीर के अन्दर रिकार्ड है, उसमें 84 जन्मों का सारा पार्ट भरा हुआ है। जैसे आत्मा निराकार है वैसे बाप भी निराकार है। कहाँ-कहाँ शास्त्रों में लिख दिया है वह नाम-रूप से न्यारा है। परन्तु नाम-रूप से न्यारी कोई

योग धारणा सेवा M.imp.

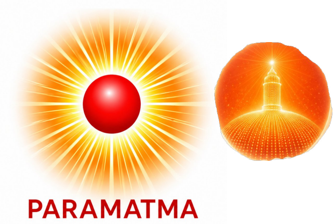

नाम - शिव
रूप - ज्योति स्वरुप
देश - शांतिधाम

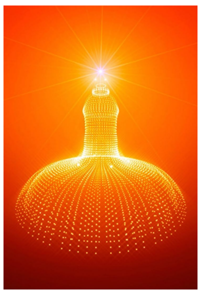

Simple Logic

दुखहर्ता सुखकर्ता

वस्तु होती नहीं। आकाश भी पोलार है, नाम-रूप तो है ना। बिगर नाम के कोई भी चीज़ होती नहीं। मनुष्य समझते हैं परमपिता नाम-रूप से न्यारा है। अगर नाम नहीं तो रूप भी नहीं, देश भी नहीं। फिर तो कुछ भी नहीं हो सकता। बुलाते भी हैं दूरदेश का रहने वाला परमपिता परमात्मा। अब दूरदेश में आत्मायें रहती हैं, यह साकार देश है, इसमें दो का राज्य चलता है - रामराज्य और रावण राज्य। आधाकल्प है रामराज्य, आधाकल्प है रावण राज्य। यह बच्चों को समझाया गया है कि सतयुग से ईश्वरीय राज्य शुरू होता है, रामराज्य स्थापन करने वाला परमपिता परमात्मा है। वह कभी रावण राज्य स्थापन कर न सके। बाप बच्चों के लिए कभी दु:ख का राज्य थोड़ेही बनायेंगे। कहते हैं ईश्वर ही दु:ख सुख देते हैं। बाप कहते हैं मैं बच्चों को दु:ख कैसे दे सकता हूँ। मेरा तो नाम ही है दु:ख हर्ता सुखकर्ता। यह तो मनुष्यों की भूल है। ईश्वर कभी दु:ख नहीं देंगे। इस समय है ही दु:खधाम। आधाकल्प रावणराज्य में दु:ख ही मिलता है। सुख की रत्ती नहीं। सुखधाम में कभी दु:ख होता नहीं। बाप स्वर्ग का रचयिता है। अभी तुम हो संगम पर। इनको नई

दुनिया तो कोई भी नहीं कहेंगे। नई दुनिया का नाम ही है स्वर्ग। वही फिर पुरानी दुनिया बनती है। नई चीज़ जब पुरानी, खराब दिखाई पड़ती है तो पुरानी चीज को खलास किया जाता है।

मनुष्य विष (विकारों) को ही सुख समझते हैं। गाया भी जाता है अमृत छोड़ विष काहे को खाए। ग्रंथ में गुरूनानक के भी अक्षर हैं। अशंख चोर... बाप की महिमा गाते हैं, आप जो आकर करेंगे उससे भला ही होगा। नहीं तो रावणराज्य में मनुष्य बुरा काम ही करेंगे। बाप ही आकर मूत पलीती कपड़े धोते हैं। ग्रंथ में बहुत लिखा हुआ है। सिन्धी लोग ग्रन्थ रखते हैं। अब यह तो कोई सिक्ख धर्म वाले हैं नहीं। यह तो हैं आदि सनातन देवी-देवता धर्म के। सिक्खों का है गुरूनानक, उनको दाढ़ी बाल थे। तो सब सिक्खों को दाढ़ी बाल होने चाहिए। आजकल तो दाढ़ी रखते नहीं। बहुत फैशनबुल बन गये हैं। नहीं तो फॉलो करना चाहिए ना। हम गुरूनानक के फॉलोअर्स हैं तो गुरूनानक को फॉलो करना चाहिए ना। यह तो बच्चों को अभी पता पड़ा है कि गुरूनानक को 500 वर्ष हुए फिर कब आयेंगे? तुम झट बतायेंगे। कोई से भी पूछो यह तो बताओ कि गुरूनानक कब आयेंगे?

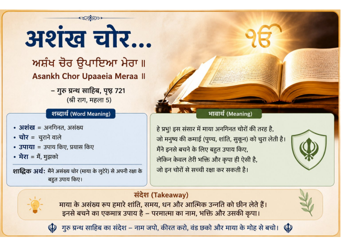

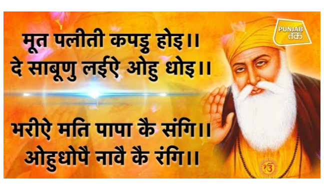

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

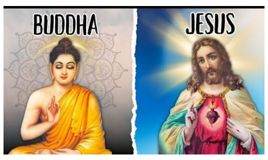

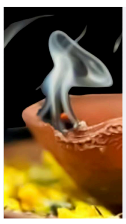

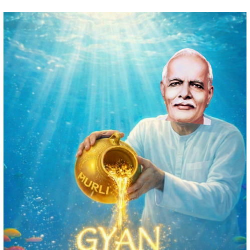

Amritsar gets its name from Amrit Sarovar, which means the "Pool of Nectar" or "Pool of Immortality" in Sanskrit and Punjabi

तो कहेंगे उनकी आत्मा ज्योति ज्योत समा गई। आयेंगे फिर कैसे। तुम कहेंगे आज से 4500 वर्ष बाद गुरूनानक फिर आयेंगे। वाह रे मैं... तुम्हारी बुद्धि में सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी चक्र लगाती रहती है। बुद्ध, क्राइस्ट आदि सबके लिए कहेंगे इस समय तमोप्रधान हैं, कब्रदाखिल हैं। इनको कयामत का समय कहा जाता है। सब मनुष्य मात्र जैसे मरे पड़े हैं। सबकी ज्योत जैसे बुझी हुई है। बाप आते हैं सबको जगाने। बच्चे जो काम-चिता पर बैठ भस्म हो गये हैं उन्हों को अमृत वर्षा से जगाकर साथ ले जायेंगे। माया ने काम-चिता पर बिठाए कब्रदाखिल कर दिया है। सो गये हैं। अब बाप अमृत छकाते (पिलाते) हैं। अमृतसर नाम इसीलिए रखा है। बाप आकर अमृत छकाते हैं। अब कहाँ ज्ञान अमृत, कहाँ पानी की बात! सिक्ख लोगों का बड़ा दिन होता है तो बड़ी धूमधाम से तालाब को साफ करते हैं, मिट्टी निकालते हैं इसलिए नाम ही रखा है - अमृतसर। अमृत का तालाब। अब गुरूनानक साहेब तो कोई ज्ञान सागर है नहीं, उसने भी बाप की महिमा की है। खुद कहते हैं एकोअंकार, सतनाम, वह सदैव सच बोलने वाला है। सत्य नारायण की कथा है ना।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

सिन्धुवर्ती लोग बाहर जाते हैं तो सत्य नारायण की कथा कराते हैं। समझते हैं सत्य नारायण की कथा से सेफ्टी से पार हो जायेंगे। अमरकथा, तीजरी की कथा कितनी भक्ति मार्ग में कथायें सुनते आये हैं। कहते हैं शंकर ने पार्वती को कथा सुनाई। वह तो सूक्ष्मवतन में रहने वाला वहाँ फिर कथा कौन सी सुनाई? यह सब बातें बाप बैठ समझाते हैं।

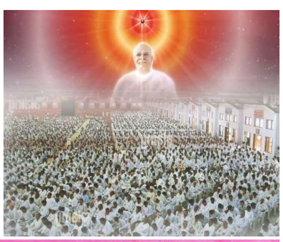

वास्तव में तुमको अमरकथा सुनाकर अमरलोक में मैं ले जाने आया हूँ। मृत्युलोक से अमरलोक में मैं ले जाता हूँ। बाकी सूक्ष्मवतन में पार्वती ने क्या दोष किया जो आकर उनको कथा सुनायेंगे। अभी तुम समझते हो हम नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनते हैं। यह है अमरलोक में जाने के लिए सच्ची सत्य नारायण की कथा, तीजरी की कथा। तुम आत्माओं को अब ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है।

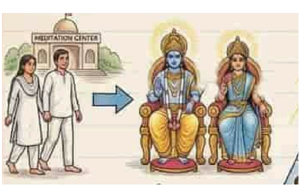

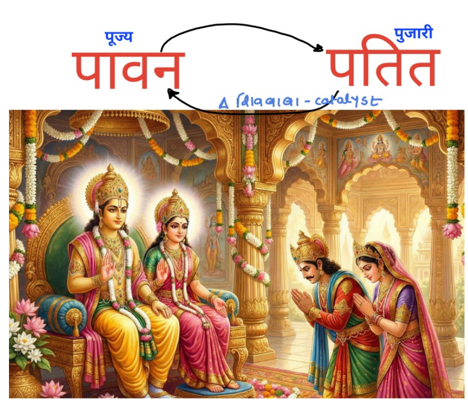

बाप समझाते हैं तुम ही गुल-गुल पूज्य थे फिर 84 जन्मों के बाद तुम ही पुजारी बने हो इसलिए गाया हुआ है - आपेही पूज्य आपेही पुजारी। बाप कहते हैं

- मैं तो सदैव पूज्य हूँ। तुमको आकर पुजारी से पूज्य बनाता हूँ। कहते हैं हे राम आकर हमको पावन बनाओ। सब भगत पुकारते हैं। आत्मा पुकारती है ना - हे पतित-पावन। अभी तुम समझते हो कि गीता कोई श्रीकृष्ण ने नहीं सुनाई है, पावन बनाने वाला एक ही परमपिता परमात्मा है। एक ही राम। तो बाप समझाते हैं कि ओपीनियन लेते रहो कि ईश्वर सर्वव्यापी नहीं है। गीता का भगवान शिव है, न कि श्रीकृष्ण। पहले तो पूछो भगवान किसको कहा जाता है - निराकार को वा साकार को? श्रीकृष्ण तो है साकार, शिव है निराकार। वह सिर्फ इस तन का लोन लेता है। बाकी माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते हैं। पहले नम्बर गर्भ में आने वाली है श्रीकृष्ण की आत्मा। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी सूक्ष्म शरीरधारी हैं। शिव को शरीर नहीं है। यहाँ इस लोक में स्थूल शरीर है। बाप की महिमा है पतित-पावन, सर्व का सद्गति दाता। सर्व का लिबरेटर, दु:ख हर्ता सुख कर्ता। अच्छा सुख कहाँ हो सकता है? सुख मिलेगा दूसरे जन्म में। जब रावण की दुनिया खत्म हो स्वर्ग की स्थापना हो जायेगी। अच्छा लिबरेट किससे करते हैं? रावण के दु:ख से। यह तो दु:खधाम है ना। अच्छा

गीता का वास्तविक भगवान कौन?

	श्रीकृष्ण	शिव परमात्मा
स्वरूप	साकार	निराकार
भूमिका	भविष्य का प्रिन्स	पतित-पावन, लिबरेटर
प्राप्ति	देवताई प्रालब्ध भोगते हैं	राजयोग का ज्ञान देकर 21 जन्मों का वर्सा देते हैं

सर्व का सद्गति दाता सर्वव्यापी नहीं, एक निराकार बाप है।

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वत: ।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ॥
Imp.
हे अर्जुन! मेरे जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् निर्मल और अलौकिक हैं—इस प्रकार जो मनुष्य तत्त्वसे* जान लेता है, वह शरीरको त्यागकर फिर जन्मको प्राप्त नहीं होता, किन्तु मुझे ही प्राप्त होता है ॥ ९ ॥ Adhyay-4

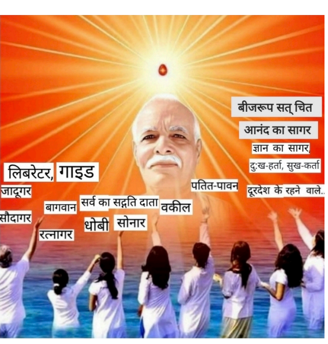

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

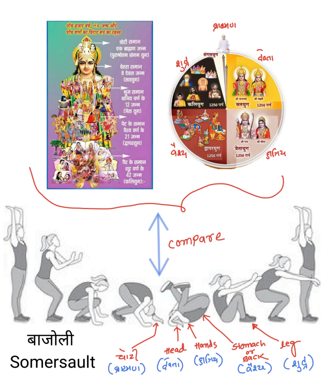

फिर गाइड भी बनते हैं। यह शरीर तो यहाँ ही खत्म हो जाते हैं। बाकी आत्माओं को ले जाते हैं। सबको दु:ख से छुड़ाय, पवित्र बनाए घर ले जाते हैं। मनुष्य जब शादी कर आते हैं तो पहले होता है पति, पीछे होती है ब्राइड। फिर बरात होती है। अब तुम्हारी माला भी ऐसी ही है। ऊपर में है शिवबाबा फूल, पहले फूल को नमस्कार करेंगे। फिर युगल दाना ब्रह्मा-सरस्वती, फिर हो तुम, जो बाबा के मददगार बच्चे हो। फूल शिवबाबा की याद से ही सूर्यवंशी विष्णु की माला बनी है। ब्रह्मा-सरस्वती सो लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। देवता, क्षत्रिय... फिर शूद्र से ब्राह्मण बन यह नॉलेज लेकर लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। यह माला उन्हों की बनी हुई है। यह ब्रह्मा-सरस्वती ही राजा-रानी बनेंगे। उन्होंने मेहनत की है, तब पूजे जाते हैं। कोई को पता नहीं है कि माला क्या चीज़ है। ऐसे ही माला फेरते रहते हैं। 16108 की भी माला होती है। बड़े-बड़े मन्दिरों में रखी जाती है। फिर कोई कहाँ से खींचेगा, कोई कहाँ से। बाबा बाम्बे में लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में जाते थे। माला जाकर फेरते थे, राम-राम जपते थे। फूल शिवबाबा है ना। फूल को ही राम-राम कहते हैं फिर सारी माला

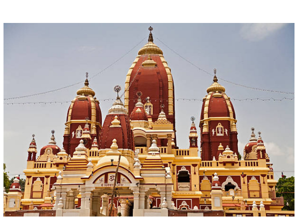

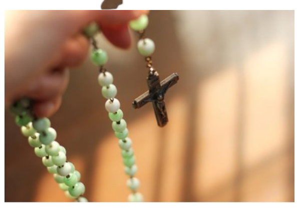

पर माथा टेकते हैं। ज्ञान तो कुछ भी है नहीं। पादरी लोग भी हाथ में माला फेरते रहते हैं। पूछो किसकी माला फेरते रहते हो? कहेंगे क्राईस्ट की याद में माला फेरते हैं। उन्हों के बड़े पोप पादरी होते हैं तो वह फिर पोपों की माला होगी। उन सबके चित्र हैं। पोपों का कितना मान है। उनको खुद पता नहीं है कि क्राइस्ट की आत्मा कहाँ है! तुम जानते हो कि क्राइस्ट की आत्मा भी अभी बेगर रूप में है। तुम भी अभी बेगर टु प्रिन्स बन रहे हो। भारत ही प्रिन्स था, अभी बेगर है फिर प्रिन्स बनते हैं। बनाने वाला है एक रूहानी बाप। बेगर से प्रिन्स बनते हो। एक प्रिन्स-प्रिन्सेज का कॉलेज भी है, जहाँ जाकर वह पढ़ते हैं। तुम यहाँ पढ़कर 21 जन्मों के लिए प्रिन्स-प्रिन्सेज स्वर्ग में बनते हो। नॉलेज से तुम मनुष्य से देवता बनते हो।

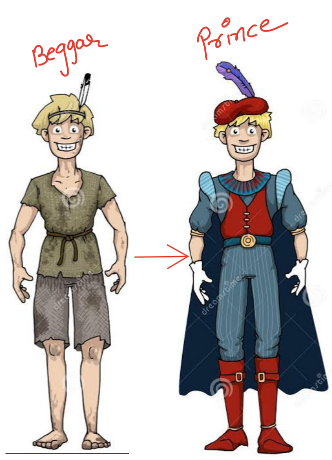

The Rajkumar College
Rajkot - ESTD. 1870

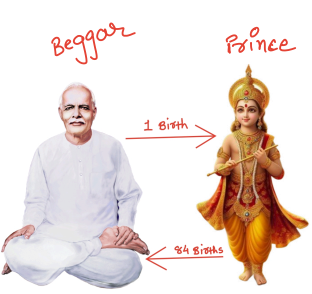

अभी तुम समझते हो जो श्रीकृष्ण सतयुग का प्रिन्स था सो 84 जन्मों के बाद बेगर बना है। 5 हजार वर्ष पहले देवी-देवतायें कितने साहूकार थे। अभी वही

चढ़ाओ नशा... How lucky and Great we are...!

03-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

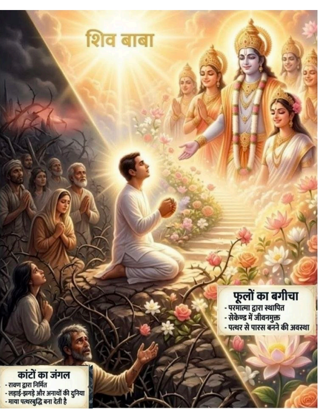

कंगाल बेगर बने हैं। यह बातें सिर्फ तुम ही सुन सकते हो। भगवानुवाच - वह सबका फादर है। तुम गॉड फादर से सुनते हो। गीता में सिर्फ भूल यह कर दी है जो शिव भगवानुवाच के बदले श्रीकृष्ण भगवानुवाच नाम डाल दिया है इसलिए गाया जाता है झूठी दुनिया। इस समय सारी दुनिया कांटों का जंगल बन गई है। बाम्बे में बबुलनाथ का मन्दिर है। बाप आकर इन कांटों को फूल बनाते हैं। सब एक-दो को कांटा लगाते हैं अर्थात् काम-कटारी चलाते हैं, इसलिए इनको कांटों का जंगल कहा जाता है। सतयुग को गार्डन ऑफ अल्लाह कहा जाता है। वही फ्लावर्स, कांटे बनते हैं फिर कांटों से फूल बनते हैं। सतयुग में कभी रावण को नहीं जलाते। रावण पुराना दुश्मन है भारत का। तुम्हारी लड़ाई है रावण से, जिसने आधाकल्प दु:ख दिया है। Coming soon... आखरीन बड़ी लड़ाई भी होगी। सच्चा-सच्चा दशहरा होना है। रावणराज्य ही खलास हो जायेगा, तुमको फिर सोने के महल मिल जायेंगे। अभी तुम रावण पर जीत पहन स्वर्ग के मालिक बनते हो। बाबा सारे विश्व का राज्य भाग्य देते हैं इसलिए उनको शिव भोला भण्डारी कहते हैं। गणिकायें, अहिल्यायें, कुब्जायें

03-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

सबको बाप विश्व का मालिक बनाते हैं। कितना भोला है। आते भी पतित दुनिया में, पतित शरीर में हैं। बाकी जो स्वर्ग के लायक नहीं हैं वह विकारों को छोड़ नहीं सकते। बाप कहते हैं - बच्चे अभी यह अन्तिम जन्म तुम पावन बनो। यह विकार प्वॉइज़न हैं जो तुमको आदि-मध्य-अन्त दु:खी बनाते हैं। क्या तुम यह एक अन्तिम जन्म इन्हें छोड़ नहीं सकते? मैं तुमको अमृत पिलाए अमर बनाता हूँ। फिर भी तुम पवित्र नहीं बनते हो। विकारों बिगर, सिगरेट बिगर, शराब बिगर रह नहीं सकते हो। मैं बेहद का बाप कहता हूँ तुम एक जन्म पवित्र बनो तो मैं स्वर्ग का मालिक बनाऊंगा।

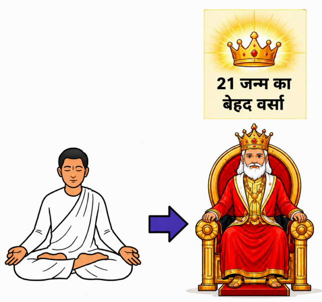

तुम जानते हो बाप आया ही है सारी दुनिया को दु:ख से लिबरेट कर सुखधाम, शान्तिधाम में ले चलने। अभी सब धर्मों का विनाश हो जायेगा। एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है। ग्रंथ में भी परमपिता परमात्मा को अकालमूर्त कहते हैं। बाप है महाकाल। वह काल तो एक दो को ले जायेंगे,

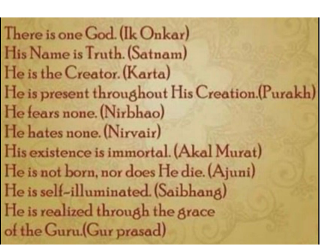
There is one God. (Ik Onkar)
His Name is Truth. (Satnam)
He is the Creator. (Karta)
He is present throughout His Creation.(Purakh)
He fears none. (Nirbhao)
He hates none. (Nirvair)
His existence is immortal. (Akal Murat)
He is not born, nor does He die. (Ajuni)
He is self-illuminated. (Saibhang)
He is realized through the grace
of the Guru.(Gur prasad)

03-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मैं तो सब आत्माओं को ले जाऊंगा, इसलिए

Definition of महाकाल कहते हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) इस अन्तिम जन्म में ज्ञान अमृत पीकर अमर बनना है। स्वयं को स्वर्ग में चलने के लायक बनाना है। बुरी आदतों को छोड़ देना है।

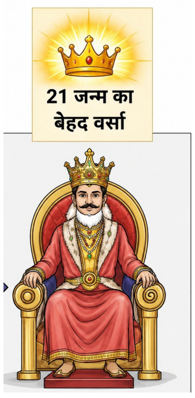

2) अभी पढ़ाई पढ़कर 21 जन्मों के लिए स्वर्ग में प्रिन्स-प्रिन्सेज बनना है। सच्ची-सच्ची सत्यनारायण की कथा सुन नर से नारायण बनने का पुरुषार्थ करना है।

Points: धारणा ...np.

03-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- कम शब्दों द्वारा ज्ञान के सर्व राज़ों को स्पष्ट करने वाले यथार्थ और शक्तिशाली भव

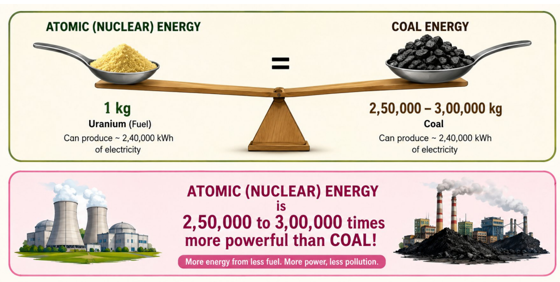

Example

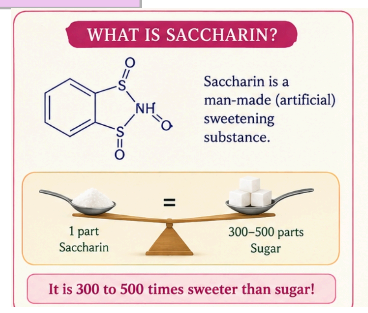

कोई भी चीज़ जितनी अधिक शक्तिशाली होती है उतनी उसकी क्वान्टिटी कम होती है।

Action

ऐसे ही जब आप अपनी निर्वाण स्थिति में स्थित हो वाणी में आयेंगे तो शब्द कम लेकिन यथार्थ और शक्तिशाली होंगे। एक शब्द में हजारों शब्दों का रहस्य समाया हुआ होगा, जिससे व्यर्थ वाणी आटोमेटिक समाप्त हो जायेगी। एक शब्द से ज्ञान के सर्व राजों को स्पष्ट कर सकेंगे, विस्तार समाप्त हो जायेगा।

Reaction/Result

Action

Reaction/Result

स्लोगन:-दिल से बाबा कहना अर्थात् खुशी और शक्ति की प्राप्ति करना।

Action

Reaction/Result

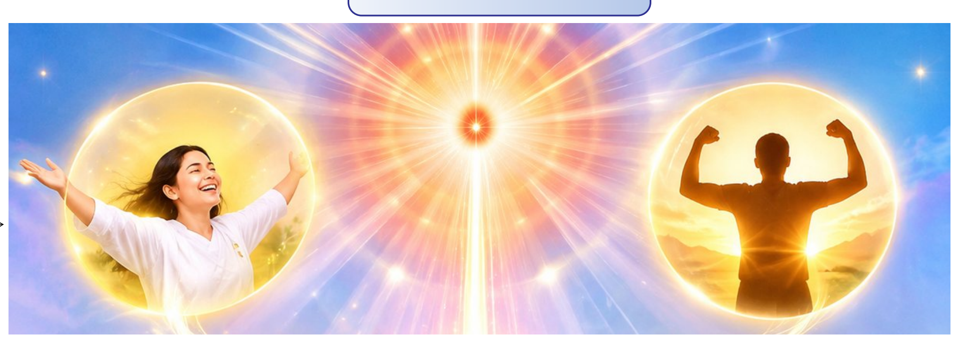

03-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अव्यक्त इशारे -

Call of time/समय की पुकार

अब अपने दाता स्वरूप को प्रत्यक्ष करो

दाता के बच्चे सर्व को देने की भावना से भरपूर बनो।

कभी यह संकल्प नहीं करो कि यह हो तो मैं भी यह करूँ।

Transactional Attitude

ऐसी परिस्थिति हो, वायुमण्डल हो तब मैं यह करूँ।

Secret

Law of Drama

दातापन के संस्कार वाले को सब तरफ से सहयोग स्वत: प्राप्त होता है

इसलिए मास्टर दाता दूसरों से लेने की भावना नहीं रख सकते।

समझा?

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Aug 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Aug 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

समझा?

अमृतवेला और सूक्ष्म सेवा

11.9 अपने फ़रिश्ते स्वरूप द्वारा साक्षात्कार कराओ :

मनसा सेवा पॉवरफुल कैसे हो — इसका विशेष प्लान बनाओ। वाचा के साथ-साथ मनसा सेवा भी बहुत दूर तक कार्य कर सकती है। ऐसे अनुभव होगा जैसे आजकल फ्लाइंग सॉसर देखते हैं वैसे आप सबका फ़रिश्ता स्वरूप चारों ओर देखने में आयेगा और आवाज़ निकलेगा कि "यह कौन हैं जो चक्र लगाते हैं!" इस पर रिसर्च करेंगे। लेकिन आप सबका साक्षात्कार ऊपर से नीचे आते ही हो जायेगा और समझेंगे यह वही ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हैं जो फ़रिश्ते रूप में साक्षात्कार करा रही हैं। अभी यह धूम मचाओ। विशेष अमृतवेले शरीर से डिटैच होकर अन्त:वाहक शरीर से चक्र लगाने का अभ्यास करो। यह अभ्यास ज़रूरी है। ऐसा अभ्यास करो जो प्रैक्टिकल में सब देख कर मिल कर आये हैं। दूसरे भी अनुभव करें — हाँ, यह हमारे पास वही फ़रिश्ता आया था। फिर ढूँढ़ते निकलेंगे फ़रिश्तों को। अगर इतने सब फ़रिश्ते चक्र लगायें तो ऑटोमेटिकली सबका अटेन्शन जायेगा। तो अभी साकारी के साथ-साथ आकारी सेवा भी ज़रूर चाहिए।

अशंख चोर...

ਅਸੰਖ ਚੋਰ ਉਪਾਇਆ ਮੇਰਾ ॥

Asankh Chor Upaaeia Meraa ॥

– गुरु ग्रन्थ साहिब, पृष्ठ 721
(श्री राग, महला 5)

शब्दार्थ (Word Meaning)

- **अशंख** = अनगिनत, असंख्य
- **चोर** = चुराने वाले
- **उपाया** = उपाय किए, प्रयास किए
- **मेरा** = मैं, मुझको

शाब्दिक अर्थ: मैंने असंख्य चोर (माया के लुटेरे) से अपनी रक्षा के बहुत उपाय किए।

भावार्थ (Meaning)

हे प्रभु! इस संसार में माया अनगिनत चोरों की तरह है,
जो मनुष्य की कमाई (पुण्य, शांति, सुकून) को चुरा लेती है।
मैंने इनसे बचने के लिए बहुत उपाय किए,
लेकिन केवल तेरी भक्ति और कृपा ही ऐसी है,
जो इन चोरों से सच्ची रक्षा कर सकती है।

संदेश (Takeaway)

माया के असंख्य रूप हमारे शांति, समय, धन और आत्मिक उन्नति को छीन लेते हैं।
इनसे बचने का एकमात्र उपाय है – परमात्मा का नाम, भक्ति और उसकी कृपा।

गुरु ग्रन्थ साहिब का संदेश – नाम जपो, कीरत करो, वंड छको और माया के मोह से बचो।

आज मुज आत्मा सजनी की मेरे प्यारे साजन से और उस प्राणप्यारे साजन की मुज सजनी से कुछ खट्टी कुछ मीठी अर्थात मजेदार रूह रीहान।

##########

Manwa laage.. o manwa laage
Laage re sanware
Laage re sanware
Le tera hua jiya ka, jiya ka, jiya ka ye gaanv re

song
Click

(मेरे प्यारे साजन,
मेरा मन जो की अब आप से ही लगा/जुड़ा रहता है जिससे की अब तो मेरे जिया का ये सारा गाँव आपका हुआ अर्थात ये दिल अब आपका और सिर्फ आपका हुआ।)

Manwa laage.. o manwa laage
Laage re sanware
Laage re sanware

Le khela maine jiya ka, jiya ka, jiya ka hai daav re
(और साथ ही साथ आपको पाने के लिए मैंने दिल/जान की बाज़ी लगा दी हैं।)

आज की मुरली (3/9/26)

हसीन मुसाफिर
द्वारा शिवबाबा

Musaafir hoon main door ka
Deewana hoon main dhoop ka
Mujhe na bhaye.. na bhaye, na bhaye chaanv re
(ओ मेरी प्यारी सजनी,
मैं हसीन मुसाफिर बहुत दूर, परमधाम से आया हुआ हूँ।
और मैं तो धुप/पवित्रता का ही दीवाना हूँ,
मुझे रिंचक मात्र भी छाँव/अपवित्रता भाति/पसंद नहीं हैं।)

समझाया है - तुम सब भक्तियां हो। मैं हूँ भगवान, ब्राइडग्रुम। तुम हो ब्राइड्स। तुम सब मुझे याद करते हो। मैं मुसाफिर बहुत ब्युटीफुल हूँ। सारी दुनिया के मनुष्य मात्र को खूबसूरत बनाता हूँ। 9/9/25

Manwa laage.. o manwa laage
Laage re sanware
Laage re sanware
Le tera hua jiya ka, jiya ka, jiya ka ye gaanv re

#####======$$$$$
【मैं आत्मा सजनी】
Aisi kaisi boli tere naino ne boli
Jaane kyon main doli
Aisa lage teri ho li main, tu mera..

(मेरे नयनो के नूर मेरे प्यारे साजन,
तुम्हारे नयनों ने ऐसी तो कैसी बोली बोली, जिससे की मुझे पता भी न रहा अर्थात सुधबुध भूल कर तुम्हारे प्यार में डोलने लगी अर्थात मगन/पागल हो गई।
और ऐसा लगा जैसे की मैं तो तुम्हारी हुई,
और तुम सिर्फ और सिर्फ मेरे......)

मुरली

(शिव साजन:)
mm.. Tune baat kholi kacche dhaago me piro li
Baaton ki rangoli se na khelun aise holi main
naa tera..
(ओ मेरी भोली सजनी 【भोली अर्थात जो माया के सभी रूपों को जानती नहीं की माया भी सर्वशक्तिमान हैं और एक पल की भी गफलत तुजे मेरा होने नहीं देंगी अर्थात दूर कर देंगी】,

तूने बाते तो बहुत ही अच्छी अच्छी और मीठी मीठी बोल के बातो की बहुत बड़ी और बापदादा को आकर्षित करने वाली माला ही बना ली।

परंतु सिर्फ ऐसी प्यारी प्यारी बातो की रंगोली से मैं तुम्हारे साथ होली नहीं खेलूंगा अर्थात मुझे तुमने जो भी बातों रूपी वायदे किये हैं उसे practical कर के दिखाओ।

तो जब तक तुम practical proof नहीं देती तब तक मैं तुम्हारा नहीं बन सकता।)

【मैं आत्मा सजनी】 m.imp

आत्मा का दृढ़ संकल्प

O.. kisi ka toh hoga hi tu
Kyun na tujhe main hi jeetun
(ओ मेरे प्यारे दिलतख्तनशीं साजन,
ये बात तो आपको माननी ही पड़ेंगी की किसी न किसी के आप साजन तो बनेंगे ही।
तो आपको क्यों न मैं ही जीतूं?

फिर चाहे उसके लिए कोई भी कीमत क्यों न चुक्तू करनी पड़े।

मेरे प्यारे साजन,
Please Underline the word कोई भी।)

【शिव साजन मंद मंद मुस्कुराते हुए बोले की..】
Khule khabon me jeete hain, jeete hain baawre
(मैं सारी श्रुष्टी का मालिक हूँ और मुझे पाने के लिए तुम जैसी कई सारी आत्माओ रूपी बाँवरी/पागल सजनिया ऐसे ही ख्वाबों में जीती हैं।

उसे ये मालुम नहीं की मुझे पाने के लिए कितनी कठिनायों का सामना करना पड़ेंगा, कितनी दृढ़ता रखनी होंगी।)

【मैं आत्मा सजनी】
Mann ke dhaage, o mann ke dhaage
Dhaage pe saanwre
Dhaage pe saanwre
Hai likha mene tera hi, tera hi, tera hi to naam re
(ओ मेरे मन के मीत,
चाहे आप मानो या न मानो परंतु मैंने जब से ब्राह्मण जन्म लिया हैं तबसे आपको पाने का ही लक्ष्य रखा हैं अर्थात मैंने मेरे मन के धागों पर सिर्फ और सिर्फ आपका ही नाम लिखा हैं।

और आप देखते जाइए - जो भी बातें मैंने कही हैं आपसे, उसको चाहे कितने ही कष्ट सहन कर के या फिर मर कर भी पूरा करेंगे।)

#####$$$$$$#####

【मैं आत्मा सजनी अपने मन ही मन】
Ras bundiya nayan piya raas rache
(मेरे नयनो की रस बून्द अर्थात मेरे नयनो के नूर मेरे साजन,
आप जब दादी गुलज़ार के तन में आते हो और stage पर खड़ी सभी आत्मा रूपी गोपिओ के साथ रास रचते हो और मिलते हो - जैसी दादी जानकीजी से मिलते हो।)

Dil dhad dhad dhadke shor mache
(तो दूर बैठी मुज आत्मा के इस दिल में अपरम अपार गति से धड़कने शोर मचाती हैं और मैं पागल बन सोचती हूँ की मैं कब दादी जी के मुआफिक ही साकार में तुमसे मिलूंगी?)

Yun dekh sek sa lag jaaye
Main jal jaaun bas pyaar bache
(और दादी को आपसे ऐसे मिलते हुए देख,

आप शमा का मुज परवाने पर शेक सा लगता हैं और उस ही शेक के कारन मैं इस देह अभिमान और सर्व विकारो सहित आप शमा पर एक पल की भी सोच बिना फ़िदा हो जाती हूँ , जिससे की बस आप और मैं अर्थात हमारा प्यार शेष रह जाता हैं।)

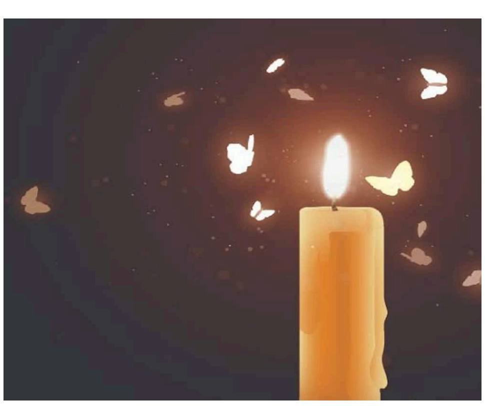

####$$$$%%%%
【आखिर भी वह दिन अब आया की आया, जब मेरे प्यारे साजन आप मुझसे कहेंगे की..】

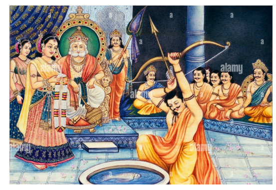

Aise dore daale kaala jaadu naina kaale
Tere main hawaale hua seene se laga le
Aa.. main tera...
(मेरी सिकिलधि सजनी,
तुम्हारी ध्रुव के मुआफिक लगन के कारन, और अर्जुन के मुआफिक तुम्हारी नज़रे जो सदा ही मुज पर टीकी रहती हैं अर्थात तुम्हारा मुझे पाने का ही एक मात्र जो लक्ष्य हैं और जब की अब आखिर वो लक्ष्य अर्थात मुझे पा ही लिया हैं तो ...

मैं भी अब तुम्हारे हवाले हुआ हूँ - तो आ जाओं मेरी बाहों में और मुझे अपने सीने से लगा लो अर्थात बाहों में ले लो।

तो अब मैं आख़िरकार सिर्फ और सिर्फ तुम्हारा हुआ।)

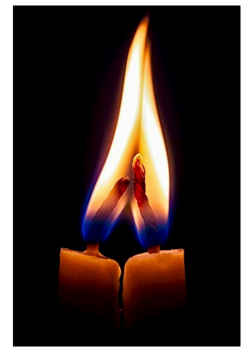

O.. dono dheeme dheeme jalein
Aaja dono aise milein
Zameen pe laage, na tere, na mere paanv re
(सारे कल्प के हिसाब से जो अब थोडा सा संगम का समय बचा हुआ हैं उसमे हम सच्चे प्यार की अगन में एक दूसरे में समा कर ऐसे धीमे धीमे जले की जिससे तुम्हारी 5000 वर्षो की प्यास बुज जाएँ।

और ऐसे combined रहे की उस स्थूल वतन या देहभान रूपी जमीं पे एक पल के लिए भी तुम्हारे पाँव न लगे और मैं तो हूँ ही परमधाम निवासी।)

Shiv Shakti (आत्मा)

Manva laage.. manva laage
Laage re sanware
Laage re sanware
Le tera hua jiya ka, jiya ka, jiya ka ye gaanv re

【मैं आत्मा सजनी】
Rahoon main tere naino ki, naino ki,
naino ki hi chaanv re...
(मेरे प्यारे साजन,
बस अब तो मुझे रहना ही हैं तुम्हारे नैनो की ही छाँव में।)

Le tera hua jiya ka, jiya ka, jiya ka ye gaanv re
Rahoon main tere naino ki, naino ki,
naino ki hi chaanv re...

other Movie song to submerge
in the love of supreme
↓

Click